ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

''कार्यरत एवं कार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय एवं शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ0 साधना अग्रवाल
असि0 प्रो0 गृह विज्ञान विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय
डी0एल0डब्ल्यू, वाराणसी।

प्रस्तुत अध्ययन कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय एंव शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन एवं उनकी तुलना करने के उदेश्य से किया गया। न्यादर्श के लिये बनारस के रामनगर क्षेत्र से 100 महिलाओं जो शिक्षण व्यवसाय तथा शिक्षित थी, उनकी 12वीं कक्षा में पढ़ने वाली 15 से 17 वर्ष की लड़कियों को स्तरित उद्देश्य पूर्ण विधि का प्रयोग करते हुये चयनित किया गया। परीक्षण के लिये डॉ0 आर0पी0 भटनागर निर्मित ''मेरी धारणाये परीक्षण तथा हाईस्कूल यू0पी0 बोर्ड परीक्षा के अंको को लिया गया। सांखिकीय गणना के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि आत्म प्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि को माता का शिक्षण व्यवसाय इतना प्रभावित नही करता जितना कि उसका शैक्षिक वातावरण आत्म उपलब्धि, सामाजिक वातावरण तथा मानसिक व बौद्धिक स्तर।

''मातायें बालकों की आदर्श गुरु होती है तथा परिवार द्वारा प्राप्त अनौपचारिक शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली और प्राकृतिक होती है।

फ्रोबिल

भारतीय परिवार संयुक्त परिवार से एंकाकी परिवार की ओर जा रहा है। एकांकी परिवारों में जहॉ बच्चों को स्वतंत्र, आत्म निर्भरता तथा व्यक्तिगत विकास के अधिक अवसर मिलते है वहीं बच्चों की अपेक्षा भी होती है। क्योंकि परिवार के बड़े सदस्य अर्थोपार्जन मे व्यस्त रहते हैं। उनका अधिकांश समय घर से बाहर व्यतीत होता है। इसलिये वे बच्चों पर विशेष ध्यान नहीं दे पाते है। शाम की थके हारे लौटे आभिभावक आर्थिक रूप से तो बच्चों की आवश्कता को पूरा कर देते है परन्तु उन्हें

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

स्नेहिल वातावरण नहीं दे पाते जिससे बच्चों में कुण्ठाओं का जन्म हो जाता है। परिणाम स्वरूप बच्चों का आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

किशोरावस्था मानव जीवन की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अवस्था है। जिसमें परिवार की अहम भूमिका होती है। परन्तु महिलाओं के कार्य करने से पारिवारिक वातावरण में जो परिवर्तन आया है उससे उनके व्यक्तित्व पर, उनकी स्वचेतना पर, उनके आत्म प्रत्यय अभिवृत्तियों, रूचियों व शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

बच्चों को अगर सबसे प्यारी चीज होती है तो वह है मम्मी का प्यार। माँ के साथ माँ का प्यार पाकर बच्चे स्वयं को सुरक्षित अनुभव करते है। अन्यथा उनमें असुरक्षा और अकेलेपन की भावना पनपने लगती है। इस भावना के कारण उनके व्यक्तित्व का उचित विकास नहीं हो पाता।

आत्म प्रत्यय के आधार पर व्यक्ति अपनी भावी योजनाएँ बनाता है। आत्म प्रत्यय का प्रभाव बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। अगर बच्चे का आत्म प्रत्यय सकारात्मक है उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होगी इसके विपरीत अगर बच्चे में नकारात्मक आत्म प्रत्यय है उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी कम होगी।

दिन प्रतिदिन शैक्षिक उपलब्धि का महत्त्व बढ़ता जा रहा है इसके निम्न कारण है–

1. विद्यालयों एंव विश्वविद्यालयों में प्रवेश हेतु प्रतियोगिता का स्तर बढ़ने के कारण शैक्षिक उपलब्धि का महत्व बढ़ रहा है।
2. शैक्षिक के महत्व का दूसरा कारण है कि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिये नेशनल मैरिट स्कोलरशिप जैसे कार्यक्रम बनाने जा रहे है।

इसके अतिरिक्त उच्च वैज्ञानिक और तकनीकी प्रशिक्षण के लिए भी विद्यार्थियों का चयन उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा योग्यता के आधार पर ही किया जाता है।

3. उच्च शिक्षा प्राप्त करने तथा नौकरी प्राप्त करने के लिये भी शैक्षिक उपलब्धि का महत्त्व है इसलिए माता–पिता जागरूक हो गये है कि उनके बच्चे अधिक से अधिक अंक प्राप्त करें। जिससे 16 या इससे वर्ष स्कूल मे व्यतीत करने पर

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

उन्हें अच्छी नौकरी प्राप्त हों सके। क्योंकि भारतीय परिवारों में बच्चों की शिक्षा पर आय के हिसाब से बहुत अधिक खर्च हो जाता है।

इस विवेचन से शैक्षिक उपलब्धि और आत्म प्रत्यय का महत्व स्पष्ट हो जाता है। इसलिए इनके अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गई।

शोधकर्त्री के मस्तिष्क में जिज्ञासा हुई एवं अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए–

1. माता के व्यवसाय का लड़कियों के आत्म प्रत्यय पर प्रभाव पड़ता है या नहीं।
2. कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय में क्या अन्तर होता है?
3. कार्यरत एव अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि में क्या अन्तर होता है?

अतः उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्ति हेतु शोधकर्ती ने कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि को अध्ययन का विषय बनाया।

समस्या कथन

कार्यरत एवं कार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के चर

अध्ययन में दो प्रकार के चर है–

1. स्वतन्त्र चर – कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाएं
2. आश्रित चर – (अ) आत्म प्रत्यय
   (ब) शैक्षिक उपलब्धि

अध्ययन के उद्देश्य

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

1. कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म–प्रत्यय का अध्ययन करना एवं उनकी तुलना करना।
2. कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना एवं उनकी तुलना करना।

परिकल्पना

1. कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक भिन्नता नहीं है।
2. कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक भिन्नता नहीं है।

अध्ययन प्रक्रिया

न्यादर्श –न्यादर्श शोध की आधारशिला होता है प्रस्तुत अध्ययन में बनारस शहर के राम नगर क्षेत्र को चयन किया गया। कार्यरत महिलाओं की लड़कियों का चयन सउद्देश्य पूर्ण विधि द्वारा किया गया और अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों का चयन दैव निर्दशन विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श में 15 से 17 वर्ष की लड़कियों को लिया गया है क्योंकि इस अवस्था में बच्चों का आत्म प्रत्यय स्थिर हो जाता है।

उपकरण –

1. आत्म प्रत्यय परीक्षण मेरी धारणायें डॉ0 आर0पी0 भटनागर
2. शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिये हाई स्कूल यू0पी0 बोर्ड परीक्षा के अंको को लिया गया है।

प्रदत्तो का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं विवेचन दो प्रकार के परिणाम प्रस्तुत किये गये–

1. तालिकाओं द्वारा कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय के सार्थक अन्तर प्रदर्शित किया गया।
2. पार्श्व चित्रों के द्वारा दोनों समूहों के आत्म प्रत्यय की तुलना की गई।

तालिका संख्या 1.0

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय सम्बन्धी तालिका

परिकल्पना–1 : कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक नहीं है।

आत्म प्रत्यय के आयाम	कार्यरत का मध्यमान सं0–50	कार्यरत का मध्यमान सं0–50	मध्यमानों का अन्तर	मध्यमानो के अन्तर की मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात
1. आकांक्षा व उपलब्धि	34.96	35.96	1.0	1.16	0.85
2. आत्मविश्वास	30.94	31.74	0.8	3.07	0.25
3. पलायनवादी प्रवृत्ति	43.24	38.86	4.38	2.70	1.61
4. अपूर्णता की अनुभूति	30.96	31.2	0.24	1.06	0.22
5. संवेगात्मक स्थिरता	28.78	27.78	0.7	3.96	0.17

तालिका संख्या 1.0 स्पष्ट से प्रदर्शित करती है आत्म प्रत्यय के पांचों आयामो में से पलायनवादी प्रवृत्ति और संवेगात्मक अस्थिरता आयाम के मध्यमानों में कार्यरत महिलाओं की लड़कियों ने कार्यरत महिलाओं की लड़कियों से उच्च अंक प्राप्त किये है। तथा आकांक्षा व उपलब्धि और आत्म विश्वास आयाम के मध्यमानों में कम अंक प्राप्त किये है। इसका तात्पर्य यह है कि कार्यरत महिलाओं की लड़कियों में आकांक्षा व उपलब्धि और आत्म विश्वास कम होता है तथा पलायनवादी प्रवृत्ति और संवेगात्मक अस्थिरता अधिक होती है जो कि आत्म प्रत्यय के नकारात्मक रूप को प्रदर्शित करते है।

तालिका संख्या 4.1 में मध्यमानों को देखने से ज्ञात होता है कि अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों ने आकांक्षा व उपलब्धि और आत्म विश्वास के आयाम में उच्च अंक प्राप्त किये है तथा संवेगात्मक अस्थिरता मे कम अंक प्राप्त किये है इसका तात्पर्य है कि अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों में आकांक्षा व उपलब्धि और

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

आत्म विश्वास अधिक होता है तथा संवेगात्मक अस्थिरता कम होती है जो आत्म प्रत्यय के सकारात्मक रूप को प्रदर्शित करती है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है कि अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों में सकारात्मक आत्म प्रत्यय होता है तथा कार्यकरत महिलाओं की लड़कियों में नकारात्मक आत्म प्रत्यय होता है।

परन्तु क्रान्तिक अनुपात की गणना करने से ज्ञात होता है कि यह अन्तर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना परि0–1 स्वीकृत की जाती है।

आकृति संख्या (1) में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है कि कार्यरत महिलाओं की लड़कियों के आत्म प्रत्यय के और ई आयाम के प्राप्तांकों का माध्यम अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों से अधिक है तथा अ, ब और द आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान कम है। तालिका संख्या 4.1 से ज्ञात होता है कि साख्यिकीय दृष्टि से यह अन्तर सार्थक नहीं है।

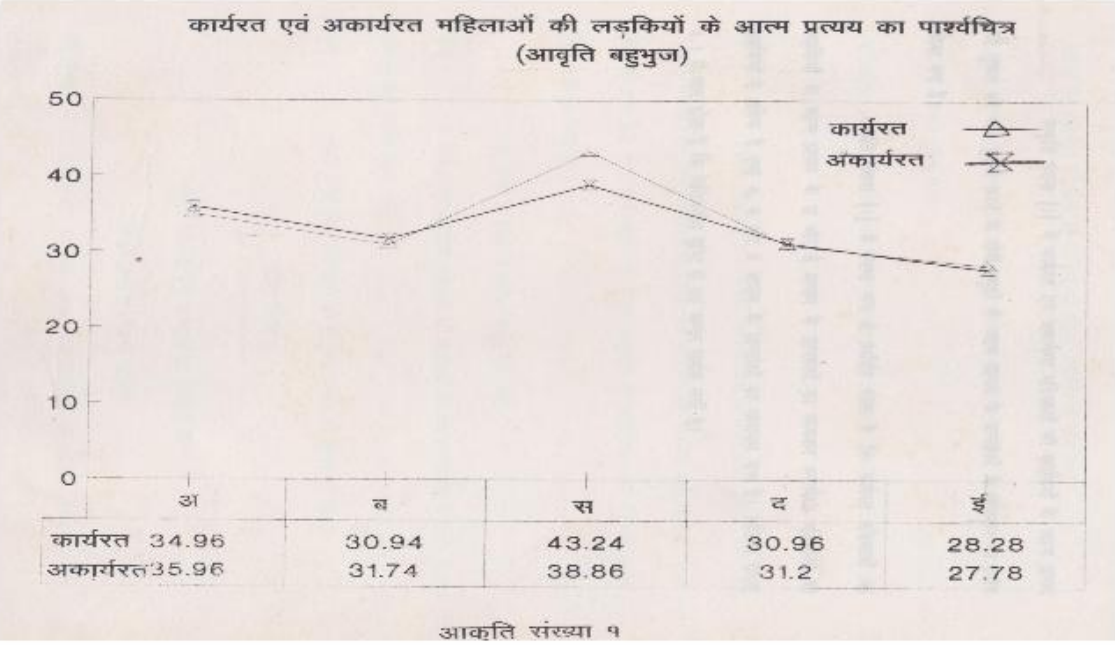

आकृति संख्या १

उपरोक्त तालिका देखने से ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत कार्यरत महिलाओं की लड़कियों का मध्यमान अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों के मध्यमान से अधिक है। तद्उपरान्त इस अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की, जिसका मान 0.04 प्राप्त हुआ। क्रान्तिक अनुपात का

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

वास्तविक मान स्वतंत्रता के अंश – 98 पर .05 स्तर पर 1.98 है। यह मान वास्तविक मान से कम है। अतः .05 स्तर पर यह अन्तर सार्थक नहीं है।

प्रस्तुत तालिका के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता नहीं है अतः परिकल्पना संख्या (परि0–20 स्वीकृत नही जाती है।

आकृति संख्या (2) में कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना की गयी है, तुलना के लिए दोनों समूहों के शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों की मध्यमानों को लिया गया है।

आकृति संख्या (2) में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है कि कार्यरत महिलाओं की लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको का मध्यमान अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों से अधिक है।

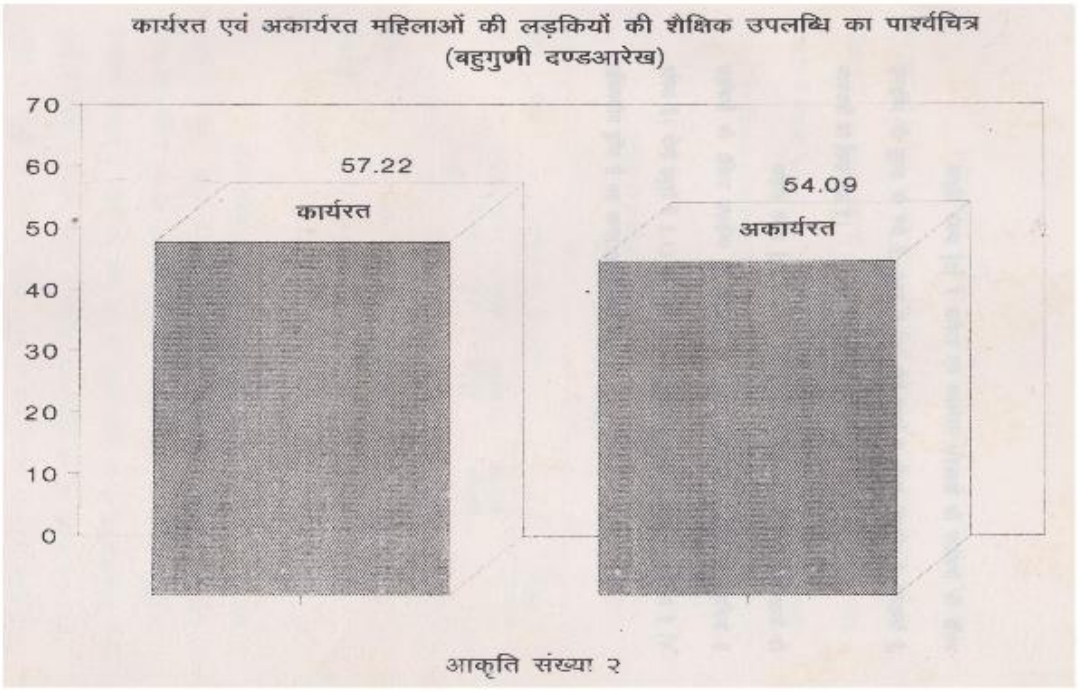

आकृति संख्या २

महिलाओं की लड़कियों में कार्यरत महिलाओं की लड़कियों की अपेक्षा कम अंक प्राप्त किए है। तदुपरान्त इस अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी है जिसका मान 0.85 प्राप्त हुआ, यह मान .05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः निष्कर्ष निकाला गया है कि किशोरावस्था की लड़कियों के

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

आत्म–प्रत्यय के आकांक्षा व उपलब्धि के आयाम पर माता के व्यवसाय का कोई नहीं पड़ता।

3. आत्म प्रत्यय के आत्म–विश्वास के आयाम के मध्यमानों में कार्यरत महिलाओं की लड़कियों ने अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों से कम अंक प्राप्त किए है। तदुपरान्त इस अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी। जिसका मान 0.25 प्राप्त हुआ। इस मान .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष निकाला गया कि किशोरावस्था की लड़कियों के आत्म–प्रत्यय के आत्म–विश्वास के आयाम पर पर माता के अव्यसाय का कोई प्रभाव नही पड़ता।
4. आत्म–प्रत्यय के पलायनवादी प्रवृत्ति के आयाम के मध्यमानों में कार्यरत महिलाओं की लड़कियों ने अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों से उच्च अंक प्राप्त किए है। तदुपरान्त इस अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी। जिसका मान 1.16 प्राप्त हुआ। यह मान .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष निकाला गया है कि किशोरावस्था की लड़कियों के लिए प्रत्यय के पलायनवादी प्रवृत्ति के आयाम पर माता के व्यवसाय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
5. आत्म–प्रत्यय के अपूर्णता की अनुभूति के आयाम के मध्यमानो में कार्यरत महिलाओं की लड़कियों ने अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों से कम अंक प्राप्त किए है। तदुपरान्त इस अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी। जिसका माना 0.22 प्राप्त हुआ। यह मान .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष गया है कि किशोरावस्था की लड़कियों के आत्म–प्रत्यय के अपूर्णता की अनुभूति के आयाम पर माता के व्यवसाय कोई प्रभाव पड़ता।
6. आत्म–प्रत्यय के संवेगात्मक अस्थिरता के आयाम के मध्यमानों मे कार्यरत महिलाओं की लड़कियों ने अकार्यरत महिलाओं की लड़कियों से उच्च अंक प्राप्त किए है। तदुपरान्त इस अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी जिसका मान 0.17 प्राप्त हुआ। यह मान .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष निकाला गया कि किशोरावस्था की लड़कियों के आत्म–प्रत्यय के संवेगात्मक अस्थिरता के आयाम पर माता के व्यवसाय को कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

7. शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों मे कार्यरत महिलाओं की लड़कियों से उच्च अंक प्राप्त किये है। तदुपरान्त इस अन्तर को ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी जिसका मान 0.40 प्राप्त हुआ। यह मान .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष निकाला गया कि किशोरावस्था की लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता के व्यवसाय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

अतिरिक्त निष्कर्ष –

तालिका संख्या 1.0 एवं 2.0 में प्रस्तुत विवरण के आधार पर शोधकर्त्री इस निष्कर्ष पर पहुँची कि लड़कियों के आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि पर माता के व्यवसाय का प्रभाव पड़ता है। परन्तु जैसा कि उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह अन्तर सार्थक नहीं है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि आत्म–प्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि कोमाता का शिक्षा व्यवसाय इतना प्रभावित नहीं करता जितना कि उसका शैक्षिक, वातावरण, आत्म उपलब्धि, सामाजिक वातावरण तथा मानसिक व बौद्धिक स्तर।

शोध का शैक्षिक महत्त्व

लोकतंत्र की सफलता देश के प्रबुद्ध व चेतन नागरिकों पर निर्भर है और इसके लिए नागरिकों का सुशिक्षित होना आवश्यक है। भारतीय शिक्षा आयोग ने भी अपने प्रतिवेदन में शिक्षा पर बल देते हुए कहा है कि भारत के भाग्य का निर्माण उसके कक्षा कक्षों में होना चाहिए। इस निर्माण की आधारशिला में बालकों के साथ बालिकाओं का योगदान भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग एवं माध्यमिक शिक्षा आयोग के प्रतिवेदनों में विद्वान शिक्षाविदों ने नारी के महत्त्व को सार्थक रूप से समझाते हुए नारी शिक्षा पर विशेष रूप से बल दिया है। एक स्त्री को शिक्षित करने का अर्थ एक परिवार की शिक्षित करने से है। अतः स्त्री शिक्षा अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, वाई.पी. भूषण ब्रज : आत्म प्रत्यय तथा निष्पत्ति का अध्ययन, जरनल ऑफ एजुकेशन रिसर्च वोल्यूम–4, नं0–2, 1967।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

2. आइजनेक, एच.जे. : एन साइकलोपोडिया ऑफ साइकोलोजी, वोल्यूम–2, एनरोल्ड डब्ल्यू, जे.एण्ड लन्दन, सर्च प्रेस, 1972।
3. एरीक्सन, ई.एच. : चाइल्डहूड एण्ड सोसाइटी, नॉरटन, न्यूयार्क, 1963।
4. कुप्पूस्वामी, बी. : बाल व्यवहार और विकास, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, 1976।
5. खरे, मंजु : कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं के बालकों द्वारा प्रत्यक्षीकृत पारिवारिक सम्बन्धों के संदर्भ में व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, डी.ई.आई.डीम्ड विश्वविद्यालय, दयालबागद, आगरा, 1979।
6. गुडविन, पावल, जी. : दी रिलेशन बिटवीन मैटरनल एमप्लॉयमेंट एण्ड दी साइकोलोजीकल कॉनस्ट्रक्टस एण्ड दी साइकोलोजी : सैल्फ कॉनसेप्ट एण्ड फैमिली ओरिएन्टेशन, डिजरटेशन एक्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल, वोल्यूम– 46, नं0–10, 1986।
7. गुप्ता अंजली : घर से बाहर कार्यरत माँ के बच्चे, सरिता, अप्रैल (द्वितीय), 1995।
8. जीमरमैन, आई.एल.एण्ड बर्नस्टिन, एम. : पैरेन्टल वर्क पैटनस इन आलटरनेटिव फैमिलीज इनफ्लूएन्स ऑन चाइल्ड डबलपमेंट, अमेरिकन जरनल आफ ओथेसाइकटरी, वोल्यूम–53, 418–435, 1983।
9. डा0 डबराल, अंशु : क्या कहते हैं बच्चे कामकाजी महिलाओं के, मनोरमा, जनू (प्रथम), 1989।
10. हरलॉक, ई0बी0 : चाइल्ड डबलमेंन्ट, टोकियो (जापान) मैकग्रो हिल सिरीज इन साइकोलॉजी, 1976।

Copyright © 2020 Authors